मायालोक से बाहर

आरती

आरती

24 अक्टूबर 1977, रीवा (मध्यप्रदेश) के एक कस्बे गोविन्दगढ़ में जन्म। हिन्दी साहित्य से स्नातकोत्तर एवं पी-एच.डी.। प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के कई उपक्रमों में संपादन कार्य। 'समय के साखी' साहित्यिक मासिक पत्रिका का पिछले सात वर्षों से संपादन। आलोचना पुस्तक 'समकालीन कविता में स्त्री जीवन' शीघ्र प्रकाश्य। आकंठ, रचना समय, वागर्थ, वर्तमान साहित्य, राग भोपाली, लोकस्वामी, हिन्दी समय (वेबसाइट) एवं कई ब्लॉगों में कविता-आलेख प्रकाशित।

संप्रति : स्वतंत्र पत्रकारिता एवं लेखन

संपर्क : बी-509, जीवन विहार कॉलोनी, पी.एण्ड.टी. चौराहा, भोपाल-03

मो. 09713035330

email: samaysakhi@gmail.com

ISBN978-81-928977-7-6

9788192897776

रचना समय

ईश्वर की भाँति तुम सर्वशक्तिमान
वरदान देने में सक्षम हो
विधि विधानों की लगाम तुम्हारे हाथ में है
सब कुछ कर सकते हो
सब कुछ पा सकते हो
निमिष मात्र में कहीं भी आ जा सकते हो
अरबों की आवाज़ दबा सकते हो
खदेड़ सकते हो
जड़ समेत उखाड़ सकते हो
निर्वासित और पद्दलित कर सकते हो
आसन्न मौत के फरमान तुम्हारी स्याही से लिखे जाते हैं
दंगे फसाद से लेकर
युद्धों तक के रिमोट तुम्हारे हाथ में हैं

ऋचाओं सूक्तियों स्मृतियों की कथाओं सा
अब हमें तुम पर विश्वास नहीं रहा

तुम्हारी घोषणाएँ अब हमें आश्वस्त नहीं करतीं
तुम्हारे आश्वासन हमारे विश्वास में तब्दील नहीं होते
कैसे कहें तुम्हारे आँसू भी सच नहीं लगते
सब कुछ छद्‌म लगता है, ईश्वरीय माया सा
कि फैलाई माया और सब मिट गया

लेकिन अब हम
पिचके पेटों
तार तार कपड़ों
बिना सपनों की नींद और ठिठुरती रात के साथ
तुम्हारे मायालोक से बाहर
कठोर ज़मीन पर पैर टिकाए खड़े हैं

और किसी भी बहस में पड़ने से अधिक
यह सच है कि तुम हममें से एक नहीं हो
कभी थे भी नहीं
और क्यूँ होना चाहोगे

ईश्वर निरंकुश सत्ता का प्रतीक है
और तुम भी सेवक कहाँ रहे
प्रतिनिधि भी नहीं रहे
अंतत: शासक ही बन गए

इतिहास की कुछेक पंक्तियों पर उँगलियाँ फेरो
देखो, उस निरंकुश सत्ता को हमने
कब का ठुकरा दिया...

मायालोक से बाहर

आरती

रचना समय

ISBN : ----

सर्वाधिकार **आरती**	
प्रकाशक **रचना समय** 197, सेक्टर बी, सर्वधर्म कॉलोनी कोलार रोड, भोपाल-462042	
पहला संस्करण	**वर्ष 2015**
मूल्य	**₹150.00**
आवरण चित्र	
मुद्रक **बॉक्स कॉरोगेटर्स एण्ड ऑफसेट प्रिंटर्स,** 14-बी, सेक्टर-आई, इंडस्ट्रियल एरिया, गोविंदपुरा, भोपाल	

MAYALOK SE BAHAR (Collection Of Poems) by **AARTI**
rachanasamay@gmail.com
मो. 9424418567

जिनके लिए इस संग्रह में
कोई कविता नहीं है
उन नन्ना–नानी को
ये सारी कविताएँ और
इसके बाद की भी

अनुक्रम

आवाज़ / 11
मायालोक से बाहर / 12
मुर्दा मौन / 15
किरच किरच / 16
धरती से भारी / 18
एक चीख़ के दायरे में / 20
पहाड़ और पगडंडियाँ / 22
पहाड़ का होना / 24
इस बुनावट में / 25
लय की तरह / 26
कोई और तो नहीं / 27
ख़ामोशी / 28
ख़ुद से / 29
तबाही / 30
बासी रोटियाँ / 31
एक बूँद इत्र / 32
कोई कहानी सुनाओ / 33
तुम्हें याद करते हुए / 34
आकार बन गया / 35
छोटी छोटी बातें / 36

नक्षत्र की तरह / 37
कुछ कहा शायद / 38
अँधेरा घिर आने पर / 39
तस्वीर बन गई / 40
तुम्हारी हृदयरेखा / 41
लाल पहड़िया के पार / 43
तुम्हारा नाम / 44
ओ बसंत, सुनो / 45
समोधन बाबा का तमूरा / 47
काँटोंवाली बाड़ / 49
ओ प्रजापति! / 51
एक मूरत और / 54
माँ की डायरी से / 55
माँ के लिए / 58
उल्टे सीधे घर / 60
तुम्हारी वाली चाय / 62
थपकियाँ देकर सुला गई / 63
आवाज़ चुगली करती है / 64
घुड़सवार महिला की कहानी / 65
मेरा घर यही है / 66
नींद भर सोने दो / 67
आग और स्वाद / 68

घरौंदा आग का / 70
क्रूर संगीत / 71
आग भी बनाई हमने / 72
गुड बाय / 73
पलकें / 74
आँगन नहीं रहा जब / 75
थोड़ा सुस्ता लो इस कालीन पर / 78
सपने / 80
एक बार फिर / 81
ऐसे बनती है कविता / 83
एक शाम का गीत / 84
वह कला / 86
बोलती आँखोंवाली / 88
ज़िंदगी एक रेलवे स्टेशन है / 90
अरावली : एक दृश्य में / 93
रीटेक : ताला के रसगुल्ले / 96
उस चादर के नीचे / 101
कबाड़खाना / 116
क्षत विक्षत / 110
भौंकने की जरूरत नहीं / 114
मैं दरख़्त बनूँगी / 117
इस तट पर कोई नहीं अब / 122

आवाज़

दो ढाई बजे रात
जब सब सो रहे हैं
कुत्ते भी
मेरा मन करता है
ज़ोर की आवाज़ लगाऊँ
दसों दिशाओं को कँपा देनेवाली आवाज़
चुप्पियों को चीरकर रख देनेवाली
चाँद के गूँगेपन के ख़िलाफ़ एक आवाज़

इस घोर सन्नाटे को भंग करके मैं
परिणाम की प्रतीक्षा करना चाहती हूँ

मायालोक से बाहर

क्रमश: चीज़ों के और सरलतम होते जाने के बाद भी
तुम हमारे लिए ईश्वरों जैसे ही हो
वह पत्थरों की मूर्तियों और तस्वीरों में दिखता है
तुम चलचित्रों में अख़बारों में
पत्रिकाओं के मुखपृष्ठों में बड़े बड़े शीर्षकों के साथ
बड़ी बड़ी घोषणाएँ करते हुए

तुम्हारी चर्चाएँ स्वाद्य आस्वाद्य
तुम्हारी पोशाक
हारी बीमारी
ईश्वर की अनगिनत गाथाओं सी रोचक
हर घर की बैठक में बहस का विषय तुम

मंदिरों और तुम्हारे द्वार पर एक सी लंबी कतारें हैं
चढ़ावे हैं मन्नतें हैं
आशीर्वाद की ललक भी है
दरस परस को लालायित तुम्हारी जनता जनार्दन